कंचना कुमारी
अतिथि शिक्षक हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

बीए स्नातक, हिन्दी, प्रतिष्ठा
पार्ट 1

CLASSMATE
Date
Page

"राम की शक्ति पूजा" का भाव-सौन्दर्य निरूपित करें।

'राम की शक्ति पूजा' निराला जी द्वारा रचित एक लम्बी कविता है जो उनके काव्य संकलन अनामिका में संकलित है 312 पंक्तियों की इस कविता की कथा पौराणिक है परन्तु निराला ने उसे सर्वथा मौलिक रूप में प्रस्तुत करते हुए प्रासंगिक बना दिया है।

'राम की शक्तिपूजा' महाकवि निराला जी के जीवन के समग्र औदात्य को अभिव्यंजित करने वाली हिन्दी साहित्य की एक महत्वम उपलब्धि है इसमें कवि ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम को सामान्य मानव के रूप में चित्रित कर उनके माध्यम से अपने संघर्ष पूर्ण व्यक्तित्व को तथा तत्कालीन राष्ट्रीय मानस को रूपांकन किया है।

राम की शक्तिपूजा प्रबन्धात्मक रचना है जिसकी कथा अपने विकास-क्रम के कई दौरों से गुजरती हुई नाटकीय स्पर्श प्राप्त करती है इस कविता की संरचना ऊपर से आख्यानपरक है परन्तु आंतरिक संयोजन नाटकीय है।

'राम की शक्तिपूजा' कविता में राम-रावण युद्ध के उस प्रसंग को वर्णन है जिसमें

Scanned with CamScanner

शक्ति रावण के पक्ष में चली जाती है और राम उद्विग्न हो उठते है फिर विभीषण की सलाह पर उनके द्वारा शक्ति की पूजा होती है और अंतत ! शक्ति राम मे समाहित हो जाती है इस रचना का कथानक पाँच सोपानों से गुजरता है इसका प्रथम सोपान है राम और रावण का सूर्यास्त होने तक का अनिर्णित युद्ध राम उदास भाव से अपनी सेना के साथ शिविर की ओर लौट रहे है दूसरा सोपान वहां से प्रारम्भ होता है जहाँ राम निबिड़ अंधकार में चिंतामग्न बैठे है। इस वातावरण में राम का हृदय अतीत - स्मृतियों में डूब जाता है उन्हें राजा जनक के उपवन में सीता के साथ प्रथम मिलन का दृश्य याद आता है इसी क्षणभर के लिए वे उत्साह से भर उठते है किन्तु शीघ्र ही वे वेदना में डूब जाते है क्योंकि शक्ति रावण के पक्ष में चली गई है।

कथानक का तीसरा सोपान हनुमान की अंतर्कथा से जुड़ा हुआ है राम की आँखों से बहते आँसू देखकर हनुमान भीषण अट्टहास करते हुए महाकाश मे पहुँच जाते है। यहां शक्ति अंजना का

रूप धारण कर उन्हें शांत करती है।

राम की शक्तिपूजा की कथा-वस्तु में नाटकीय कथावस्तु के अनुरूप सभी कार्यव्यापार और नाट्य संधियाँ उपयुक्त स्थान और अनुपात में अनुस्यूत है राम के हृदय में अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण करके कवि ने उन्हें पाश्चात्य नाटकों के नायकों की परम्परा में डाला है। इस तरह इस रचना में उत्साह और अवसाद के भावों का आरोह-अवरोह नाटकीय संस्पर्श के साथ उपस्थित हुआ है जो बड़ा ही कलात्मक है।

Scanned with CamScanner